Dainik Bhaskar (Indore), 09th April 2025, Front Page- plus 02

सिटी एंकर लाइफ स्टाइल के आधार पर बना रहे 'डिजिटल ट्विन', लॉग इन करते ही पता चलेगा दिल व फेफड़े कितने हैं दुरुस्त

IIT का डिजिटल प्लेटफॉर्म; एक क्लिक पर मिलेगी पूरी मेडिकल हिस्ट्री

सौदामिनी ठाकुर | इंदौर

आईआईटी इंदौर का इन्क्यूबेशन सेंटर एक ऐसा प्लेटफॉर्म बना रहा है, जिस पर लॉग इन करते ही पता चल जाएगा कि आपके फेफड़े और दिल की स्थिति कैसी है। यह प्लेटफॉर्म सभी तरह की मेडिकल रिपोर्ट्स जैसे एक्स-रे, सीटी स्कैन, ब्लड टेस्ट, एमआरआई के साथ ही मनुष्य की आदतों, वातावरण, जेनेटिक्स और पुरानी बीमारियों की जानकारी की मदद से इंसान के अंगों का डिजिटल प्रारूप बनाएगा। इस प्लेटफॉर्म को 'चरक-डीटी' नाम दिया है।

इस प्रोजेक्ट पर 2 साल से काम चल रहा है। अब तक इसमें फेफड़ों का डिजिटल ट्विन बनाने पर काम किया गया है। इसका नेतृत्व आईआईटी इंदौर के प्रोफेसर भूपेश लाड कर रहे हैं। अब टीम इंसान के दिल का डिजिटल ट्विन बनाने पर काम कर रही है। आगे जाकर पूरे शरीर का एक डिजिटल ट्विन बनाया जाएगा। मरीज अपना ये रिकॉर्ड इस प्लेटफॉर्म पर अपनी आईडी से लॉग इन करके देख सकेगा। किसी भी तरह की स्वास्थ्य समस्या होने पर डॉक्टर से उपचार करवा सकेगा।

इस आधार पर बना रहे एआई मॉडल :

10 हजार एक्सरे
05 हजार सीटी स्कैन डॉक्टर की रिपोर्ट के साथ
400 से ज्यादा पेशेंट्स का डाटा, जिनका 3 महीनों में अस्पतालों में उपचार हुआ है
04 लोगों की टीम एम्स दिल्ली में तैनात
02 लोगों की टीम एम्स भोपाल में तैनात

50 डिजिटल हेल्थकेयर के प्रोजेक्ट्स जुड़ चुके

इस प्रोजेक्ट से अब तक 50 डिजिटल हेल्थकेयर के प्रोजेक्ट्स जुड़ चुके हैं। इन 50 में से 15 स्टार्टअप हैं और 35 देशभर के विभिन्न इंस्टिट्यूट में रिसर्च कर रहे प्रोफेसर। आने वाले महीनों में 15 और स्टार्टअप इससे जोड़े जाएंगे। तीन साल में 150 लोगों को इससे जोड़ने का लक्ष्य है, जिससे पूरे इंसान के शरीर का डिजिटल ट्विन बनाया जा सके।

इस तरह काम करेगा ये प्लेटफॉर्म

आभा प्लेटफॉर्म सरकार का वो प्लेटफॉर्म है जिस पर अस्पताल द्वारा मरीजों की सारी रिपोर्ट्स उनकी आईडी बनाकर अपलोड की जाती है। यह आभा आईडी इंसान के आधार नंबर से जुड़ी होती है। आगे जाकर यह आभा प्लेटफॉर्म दुनिया का सबसे बड़ा मेडिकल रिकॉर्ड्स प्लेटफॉर्म बनेगा। इसमें मौजूद रिपोर्ट्स को चरक डीटी के एआई मोड्यूल में डालने से किसी भी मरीज के उस अंग का डिजिटल ट्विन दिख सकेगा। किसी भी डॉक्टर को आभा पोर्टल या चरक डीटी पोर्टल पर ये रिपोर्ट्स देखने के लिए मरीज से ओटीपी लेना होगा।

अगले तीन साल का प्लान बनाया

प्रोजेक्ट पर काम कर रहे इन्क्यूबेशन सेंटर दृष्टि फाउंडेशन के सीईओ आदित्य व्यास ने बताया कि प्रोजेक्ट के लिए एम्स दिल्ली और भोपाल से डाटा ले रहे हैं। इसमें 80-90% डाटा बिना मरीज की पहचान उजागर किए मिलता है। कुछ मरीज स्वेच्छा से डाटा दे रहे हैं। 3 साल में एक करोड़ मरीजों को इस प्लेटफॉर्म से मदद मिलेगी। इस प्लेटफॉर्म को देश के 10 मेडिकल कॉलेज में स्थापित करने का लक्ष्य है। देश के अलावा तीन अन्य देशों में भी इस प्रोजेक्ट पर काम करने की तैयारी है।